Department of Pre University Education
2nd PUC Supplymentry Exam Key Answers August - 2022
Hindi -Code: 03 (NS)

1] अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए

1) भिक्षुक द्वार पर आकर चिल्लाने लगा। **1**

2) भिक्षुक के गाँव का नाम अमोला है। **1**

3) कर्त्तव्य करने से चरित्र की शोभा बढ़ती है। **1**

4) धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। **1**

5) मन्नू भंडारी का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में 1931 ई. में हुआ। **1**

6) लेखिका की बड़ी बहन का नाम सुशीला था। **1**

7) पिता जी रसोई घर को भटियारखाना कहते थे। **1**

8) विश्वेश्वरय्या का पूरा नाम मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या था। **1**

9) १४ अप्रैल १९६२ को बेंगलूर में विश्वेश्वरय्या जी का निधन हुआ। **1**

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए **3**

10) सुजान महतो की संपत्ति बढी तो उनके चित्त की वृत्ति धर्म की ओर झुक पडी। साधु-संतों का आदर सत्कार होने लगा, द्वार पर धूनी जलने लगी। कानूनगो इलाके में आते तो सुजान की चौपाल में ठहरते। हल्के के हेड कांस्टेबल, थानेदार, शिक्षा विभाग के अफसर यहाँ तक कि बड़े-बड़े हाकिम भी उसके चौपाल में आकर ठहरने लगे। घर में भजन-भाव होता, सत्संग होता सुजानने गाँव में एक पक्का कुआ बनवा दिया इसनहर जो काम गाँव के किसी ने न किया था सुजानने कर दिखाया।

अथवा **3**

बेटे और पत्नी से जो अनादर हुआ, उससे सुजान बहुत ही चिंतित था। उसे लगा कि अब तक जिस घर में राज किया, उसी घर में पराधीन बनकर वह नहीं रह सकता। उसे अधिकार चाहिए। वह इस घर पर दूसरों का अधिकार नहीं देख सकता। मंदिर का पुजारी बनकर नहीं रह सकता। उसी क्षण से वह कठोर परिश्रम करने लगा। रात भर बैलों का चारा काटता रहा, सुबह तक कटिया का पहाड़ खड़ा कर दिया। सवेरे ही हल लेकर खेत में पहुँचा। भोला जब किसानों के साथ हल लेकर खेत में पहुंचा तब तक सुजान आधा खेत जोत चुका था। दोपहर में भी विश्राम नहीं किया। डाँड फेंकना, अनाज बोना, खेत की सुरक्षा आदि इस प्रकार आठ महीने निरंतर परिश्रम किया। खेत ने सोना उगल दिया। बखारी में अनाज रखने की जगह न रही। इस तरह सुजान ने अपना खोया हुआ अधिकार फिर प्राप्त कर लिया।

3

11) झूठ की उत्पत्ति पाप, कुटिलता और कायरता के कारण होती है। बहुत से लोग नीति और आवश्यकता के अनुसार झूठ बोलने का बहाना बनाते हैं। संसार में बहुत से ऐसे नीच लोग है जो झूठ बोलकर अपने को बचा लेते हैं। लेकिन यह सब सच नहीं झूठ बोलना पाप का ही काम है और उससे कोई काम भी नहीं होता। झूठ बोलना और भी कई रूपों में देख पड़ता है। जैसे चुप रहना, किसी बात को बढ़ाकर कहना, किसी बात को छिपाना, भेद बदलना, दूसरों के हाँ में हाँ मिलाना, वचन देकर पूरा न करना आदि।

3

12) गंगा मैया समाज में व्याप्त समस्याओं के बारे में कहती हैं – महँगाई, रिश्वतखोरी और पाशविकता बढ़ती चली जा रही है। धर्म का व्यापारीकरण हो रहा है। राजनीति के बारे में तो कहना ही क्या – सब कुर्सी के लिए झगड़ रहे हैं। कुर्सी का अर्थ है – शक्ति। शक्ति का अर्थ है – वैभव, धन, सम्मान, कीर्ति आदि। एक बार इसका चस्का जबान पे चढ़ जाय तो फिर कुछ अच्छा नहीं लगता। ये छिन जाए तो व्यक्ति ऐसा भटकता है जैसे मजनू लैला के पीछे पीछे घूमता था।

3

13) मन्नू की माँ उनके पिता के ठीक विपरीत थी। वह पढ़ी-लिखी नहीं थी। धरती से ज्यादा धैर्य और सहनशक्ति उसमें थी। पिताजी की हर ज्यादती को वह सह लेती और बच्चों की हर जिद हर फरमाइश सहज भाव से स्वीकार करती। सबकी इच्छा और पिताजी की आज्ञा को पालन करने के लिए सदैव तैयार रहती। सारे बच्चों का लगाव माँ के साथ था। लेकिन चुपचाप असहाय मजबूरी में रहना, उनका त्याग वगैरा सब मन्नू के लिए कभी आदर्श नहीं रहा।
अपने घर के अंदर और घर के बाहर खेले जानेवाले खेलों के बारे में मन्नू कहती है कि उस जमाने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थी बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थी। इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आजकल ऐसे नहीं है ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने शहरों के फ्लैट में रहनेवालों को यह 'पड़ोस कल्चर' नहीं समझ में आता। घर के चार दिवारों में रहनेवाले लोगों ने इस पड़ोस कल्चर को कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है कि पड़ोस में रहके भी हमें उनके बारे में कुछ भी पता नहीं रहता, नाही उनको हमारे बारे में।

3

14) सर एम. विश्वेश्वरय्या एक कर्मयोगी थे। वे समय के पाबन्द थे। वे समय के सदुपयोग के बारे में अच्छी तरह जानते थे। समय पर अपने सभी काम करते थे। उन्होंने जीवन पर्यंत विश्राम नहीं लिया। वे सदा मेहनत करते थे, दूसरों से भी यही आशा रखते थे। वे सेवाभाव को अत्यंत पवित्र आचरण मानते थे। जिन्दगी भर देश की तथा मानव-समाज की सेवा में लगे रहे। उनका चरित्र आदर्शपूर्ण था। वे विनयशील तथा साधु प्रकृति के थे। ईमानदारी तो उनके चरित्र की अटूट अंग ही थी। असाधारण प्रतिभा रखते हुए भी उन्होंने कभी गर्व का अनुभव नहीं किया।

अपने श्रम और स्वावलम्बन द्वारा कोई भी शिखर तक पहुंच सकता है, इसके जबर्दस्त प्रमाण है – विश्वेश्वरय्या।

2] अ) निम्नलिखित वाक्य किसने किससे कहे?

15) यह वाक्य सुजान ने अपनी पत्नी बुलाकी से कहा। 1

16) यह वाक्य बुलाकी ने अपने पति सुजान भगत से कहा। 1

17) यह वाक्य भिक्षुक ने सुजान भगत से कहा। 1

18) इस वाक्य को लेखिका मन्नू भंडारी अपनी माँ से कहती है। 1

19) यह वाक्य मन्नू भंडारी के पिताजी ने अपनी पत्नी से कहा। 1

20) यह वाक्य डॉ. अंबालाल ने मन्नू के पिताजी से कहा। 1

आ) **ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए :**

21) **प्रसंग** : 'सुजान भगत' नामक कहानी से लिया गया है जिसके लेखक प्रेमचंद हैं। 3

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य को भोला अपने पिता के बारे में अपनी माँ बुलाकी से कहता है।

स्पष्टीकरण : एक दिन बुलाकी ओखली में दाल छाँट रही थी। एक भिखमँगा द्वार पर आकर चिल्लाने लगता है। भोला माँ से उसे कुछ देने के लिए कहता है, तो बुलाकी पूछती है कि तुम्हारे पिताजी क्या कर रहे हैं, तो व्यंग्य से भोला कहता है कि दिन भर एक न एक खुचड़ निकालते रहते हैं, सारा दिन पूजा-पाठ में ही निकल जाता है और अभी ऐसे बूढ़े नहीं हुए। इससे हमें पता चलता है कि सुजान का अनादर घर में कैसे होता रहा।

3

22) **प्रसंग**: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'कर्त्तव्य और सत्यता' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं।

संदर्भ : कर्त्तव्य करने की महत्ता का वर्णन करते हुए लेखक इस वाक्य को पाठकों से कहते हैं।

स्पष्टीकरण : डॉ. श्यामसुन्दर दास कहते हैं कि कर्तव्य करना हम लोगों का परम धर्म है। संसार में मनुष्य का जीवन कर्तव्यों से भरा पड़ा है। घर में, पारिवारिक सदस्यों के बीच और समाज में मित्रों, पड़ोसियों और प्रजाओं के बीच मनुष्य को अपना कर्तव्य निभाना पड़ता हैसमाज के प्रति, देश के प्रति सच्चा कर्तव्य निभाने से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्तव्य करना न्याय पर निर्भर है। ऐसे सामाजिक न्याय को समझने पर हम लोग प्रेम के साथ कर्तव्य निभा सकते हैं।

3

23) **प्रसंग**: प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गंगा मैया से साक्षात्कार' नामक पाठ से लिया गया है जिसके लेखक डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी हैं।

संदर्भ : लेखक के अंतिम प्रश्न के उत्तर में गंगा मैया कहती हैं कि प्रकृति सर्वशक्तिमान है। ऐसा पहले भी हुआ है, पतन की जब पराकाष्ठा हो जाती है तभी पुनः उत्थान की किरणें

फूटती हैं।

स्पष्टीकरण : लेखक जब अंतिम प्रश्न करता है कि माँ, भविष्य में क्या संभावनाएँ हैं? तब गंगा मैया कहती है कि यह प्रकृति सर्वशक्तिमान है। पतन जब अधिक होना शुरू हो जाता है, तभी उत्थान का मार्ग खुलता है।

3

24) प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' नामक पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत वाक्य में लेखिका स्वयं अपने पिता के स्वभाव का परिचय देते हुए इसे कहती हैं।

स्पष्टीकरण : मन्नू भण्डारी के पिताजी एक सुशिक्षित संवेदनशील व्यक्ति थे। जब वे इन्दौर में थे, तब उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी, सम्मान था, नाम था। राजनीति के साथ-साथ समाज-सुधार के कारण वे बेहद क्राधा गए। गिरती आमधारण, अपनों के हा कामों से भी जुड़े हुए थे। लेकिन एक बड़े आर्थिक झटके के कारण, अपनों के हाथों विश्वासघात किए जाने के कारण वे इंदौर से अजमेर आ गए। गिरती आर्थिक स्थिति, नवाबी आदतें, अधूरी महत्वाकाँक्षाएँ आदि के कारण वे बेहद क्रोधी और शक्की मिजाज के बन गए।

अथवा **3**

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक कहानी यह भी' नामक ' पाठ से लिया गया है जिसकी लेखिका मन्नू भण्डारी हैं।

संदर्भ : एक बार कॉलेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि पिता जी आकर मिलें। पत्र पढ़ते ही पिता जी आग-बबूला होकर यह वाक्य अपनी पत्नी से कहते हैं।

स्पष्टीकरण : यश-कामना पिताजी की सबसे बड़ी दुर्बलता थी। वे हमेशा सोचा करते कि कुछ ऐसे काम करने चाहिए कि समाज में उनका नाम हो, सम्मान हो, वर्चस्व हो। अपने वर्चस्व को धक्का लगनेवाली किसी भी बात को वे बर्दाश्त नहीं कर पाते। एक बार कालेज से प्रिंसिपल का पत्र आया कि आपकी बेटी के खिलाफ अनुशासनात्मक कारवाई क्यों न की जाए। पत्र पढ़ते ही मन्नू के पिताजी आग-बबूला होकर उपरोक्त वाक्य कहते हैं।

3] अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

25) अंग-अंग में चंदन की/प्रभु की भक्ति का सुगंध समा गई है। **1**

26) रैदास राम की रट लगाए हुए हैं। **1**

27) श्रीकृष्ण के कान में मकर के आकार का कुंडल है। **1**

28) श्रीकृष्ण के अनुया नान सखा ने सब माखन खा लिया हैं। **1**

29) कवयित्री मिटने के अधिकार की बात कर रही है। **1**

30) बेटी कहती है कि सोने के गहने तकलीफ देते हैं, अतः नहीं चाहिए।

31) कवि के अनुसार प्रतिहिंसा दुर्बलता है। **1**

32) वृक्ष का शरीर पुराने चमड़े से बना हुआ है। 1

33) जंगल को मरुथल (रेगिस्तान) होने से बचाना है। 1

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 3

34) संत रैदास ने रामराज्य का वर्णन किया है। वे कहते हैं- ऐसा राज्य होना चाहिए जिसमें सभी प्रजा को अन्न (आहार) मिले, जहाँ छोटे-बड़े, धनी-गरीब, दीन-दलित सभी को समान अधिकार मिले। सभी समान रूप से, सौहार्दता से जिएँ। वे परिश्रम करके खुशहाल रहें।

3

35) महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री थीं। प्रकृति वर्णन छायावाद का प्रमुख अंग हैं। 'अधिकार' कविता में भी कवयित्री ने कई प्राकृतिक तत्वों के द्वारा हमें संदेश दिया है। फूल, तारे, मेघ, वसंत ऋतु आदि प्राकृतिक तत्वों द्वारा दुःख एवं वेदना का अनुभव कराया है। नीले मेघों को धुलना चाहिए और वसंत ऋतु के बाद ग्रीष्म ऋतु का आना स्वाभाविक है। उसी तरह मानव जीवन में सुख-दुःख सामान्य है। दुख, वेदना, यातना की अनुभूति कर धैर्य से सामना करना चाहिए।

3

36) गहने कविता के द्वारा कवि यह कहना चाहते है कि नैसर्गिक सुंदरता ही असली सुंदरता होती है। सुंदर दिखने के लिए सोने चांदीके गहने पहनना जरूरी नही होता। सोने-चांदीके गहने बहुत मँहगे होते है। माँ-बाप अपनी सारी मेहनत की कमाई गहने खरिदने में खर्च करते है। कुछ बच्चों को गहने पसंद नही आते, नाहि रंगबिरंगे, मँहगे कपडे पहनना। फिर वे मिट्टी में आदि खेल नही सकते। मातृत्व को पाकर एक औरत के चेहरे पर संतुष्टी का भाव आता है, वही उसकी सुंदरता होती है।वैसे ही बच्चेका निष्पाप रुपभी उतना ही सुंदर होता है। उन्हे गहनों की क्या जरूरत? माँ का गहना उसकी बच्ची है और बच्ची का गहना उसकी माँ है। दूसरों को दिखाने के लिए, सुंदर दिखने के लिए हम क्यों गहने पहने? कवि का यही आशय है।

3

37) कवि नरेन्द्र शर्मा ने 'कायर मत बन' कविता में मानव को कायर नहीं बनने का संदेश दिया है। कवि मानवता को अत्यधिक महत्व देते हुए दुष्टों के सम्मुख आत्मसमर्पण न करने के लिए कहते हैं। युगों तक खून-पसीना बहाकर, अत्यधिक परिश्रम से मानवता रूपी वृक्ष को जो निर्माण किया है, उसके तले आराम से जीना चाहिए। यदि कोई मूर्ख 'युद्धम् देहि' कहे तो उसका मुँह तोड़ जवाब देना चाहिए। या तो प्यार के बल पर से उसे जीतना चाहिए नहीं तो उसे सबक सिखाना चाहिए क्योंकि 'मानव' अमोल है। ले-दे कर जीना, जीना नहीं है। धैर्य और साहस से दुष्टों का विनाश करके प्रजा की रक्षा करनी चाहिए। व्यक्तिगत तौर पर भी

हमेशा गम के आँसू पीते कब तक हम रह सकते हैं? साहस से कष्टों का सामना कर मानवता के पथ पर निरंतर आगे बढ़ना चाहिए।

3

38) पेड के कट जाने से कवि संवेदनशील हो गए है, उसकी याद में वह भावनाशील हो गए हैं। वह कह रहे है शुरु से ही मुझे डर था कि कोई दुश्मन इस. पेड को काट न दे। अब सवाल एक पेड़ का नहीं, ऐसे कई पेड, कई जगह पर कटे जा रहे है। अपने स्वार्थ के लिए, कभी जगह के लिए तो कहीं लकडी का फर्निचर घर बनाने लोग पेड़ों को काट रहे है। इन लूटेरों से अब हमे बचाना है। इन आतंक फैलाने वालों से, अपने शहर को बचाना है। अपने देश को इन गद्यारोंसे बचाना है क्योंकि वे अपने देश या यहाँ के लोगों के बारे में नही सोच रहे है।आज वे इन पेड़ों को काट रहे है कल ये लूटेरे सारे देश को लूटेंगे नही तो एक दिन ये नदियाँ नाले जैसे बन जाएँगे, हवा धुंआ हो। जाएगा, धुओ से भर जाएगा, तो साँस लेना भी मुश्किल हो जाएगा। पेड नही रहेंगे, बारिश न होगी, हवा गंदी हो, जाएगी तो खाना भी जहर हो जाएगा, जंगल कट जाँएगे और मरुस्थल बन जाएगा। इसके पहले कि यह हाल बनाएँगे हमे बचाना है इस देश को नही तो एकदिन यहाँ सिर्फ मनुष्यों का जंगल बन जाएगा और सभी मनुष्य जानवर जैसे व्यवहार करने लगेगे।

इ) ससंदर्भ भाव स्पष्ट कीजिए – **4**

39) प्रसंग: प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के रैदासबानी' से लिया गया है जिसके रचयिता संत रैदास हैं।

संदर्भ : कवि ने भगवान के प्रति पूरे समर्पण भाव को स्वीकारते हुए स्वयं को पानी तथा प्रभु को चंदन के रूप में स्वीकार किया है।

भाव स्पष्टीकरण : रैदास जी कहते हैं कि अब उनका मन राम में लग गया है। वह अब प्रभु-भक्ति से छूटेगा नहीं। वे कहते हैं – प्रभु जी चन्दन के समान है और हम पानी के समान है जिसके शरीर पर लगने से अंग-अंग सुगंध से भर गया है। प्रभु जी बादल के समान हैं और भक्त मोर के समान। आसमान में बादल दिखते ही मोर नाच उठता है। वैसे ही प्रभु का नाम सुनते ही भक्त रोमांचित हो जाता है। जिस प्रकार चकोर पक्षी चाँद को निहारता है वैसे ही रैदास प्रभु की ओर निहारते रहते हैं।

विशेष : अलंकारः अंत्यानुप्रास, दास्य भक्ति, शरणागत तत्व।

अथवा **4**

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'सूरदास के पद' से लिया गया है, जिसके रचयिता सूरदास जी हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पद में गोपियाँ उद्धव को संबोधित करती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! आज हम स्वयं को बहुत भाग्यशाली मान रहे हैं क्योंकि जो आँखे हमारे प्यारे कृष्ण के दर्शन करके आयीं हैं उन्हीं आँखों के दर्शन हमें मिल गए हैं।

भाव स्पष्टीकरण : सूरदास ने भ्रमर गीत में ब्रज की गोपिकाओं की विरह-व्यथा का बहुत ही मार्मिक ढंग से वर्णन किया है। श्रीकृष्ण कंस को मारने मथुरा गए लेकिन बहुत दिनों तक वापस ब्रज नहीं आये। यहाँ श्रीकृष्ण के बिना गोपिकाएँ बहुत ही उदास थीं। वे कृष्ण की राह देखती थीं। श्रीकृष्ण अपने सखा उद्धव को ब्रज के बारे में जानने के लिए भेजते हैं। उद्धव से गोपिकाएँ कहती हैं – 'आज हम बहुत ही भाग्यशालिनी बन गईं। जिन आँखों से तुमने श्याम को देखा उन आँखों को देखने का सौभाग्य हमें मिल रहा है। जैसे फूल सुगंध ले आता है, हवा प्यारे भौरे को, वैसे ही हमें श्रीकृष्ण का संदेश मिल गया है। श्रीकृष्ण के बारे में सुनकर बहुत ही आनंद हो रहा है और हमारे अंग-अंग में सुख का अनुभव हो रहा है नहीं तो हमारा विरह-व्यथा से जीना मुश्किल हो जाता।

विशेष : अनुप्रास अलंकार, रूपक अलंकार। ब्रज भाषा।
गोपिकाओं का श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम व्यक्त हुआ है।

4

40) **प्रसंग :** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'गहने' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुवेंपू हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियों में उन्होंने गहने से अधिक माँ और बेटी के रिश्ते को महत्व दिया है।

भाव स्पष्टीकरण : माँ अपनी बेटी से सोने के गहने और रंगीन कपड़े पहनने के लिए कहती है। बेटी ऐसा करने से मना करती है क्योंकि सोने के गहने तकलीफ़ देते हैं और रंगीन कपड़े उसे मिट्टी में खेलने नहीं देते। वह कहती है कि देखनेवाले को भले ही आनंद दे लेकिन मुझे बड़ा बंधन लगता है।

विशेष : सरल भाषा, माँ और बेटी का मधुर संबंध।

अथवा **4**

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'अधिकार' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा हैं।

संदर्भ : यहाँ महादेवी वर्मा अपने अज्ञात प्रियतम से कहती हैं कि जिसमें न तो विरह वेदना है और न ही किसी का दुख है, हे देव यह लोक मुझे नहीं चाहिए। मैं तो इस लोक में अपने वेदनामय जीवन से ही सुखी हूँ।

स्पष्टीकरण : महादेवी वर्मा इन पक्तियों में कहती हैं कि जिस लोक में अवसाद नहीं, वेदना नहीं, ऐसे लोक को लेकर क्या होगा? जो खुद अपने लिए जीता है, उसका जीना भी क्या? जो परिस्थितियों का डटकर सामना करता है, वही असली जीना जीता है। जिसमें आग नहीं, जिसने जलना नहीं जाना, उसका जीना भी क्या? वह तो खुशी से मर-मिटना भी नहीं

जानता। जो दुःख का सामना करना जानता है, मर-मिटना जानता है, वही मुसकुराना भी जानता है।

अथवा **4**

प्रसंग : प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'साहित्य गौरव' के 'एक वृक्ष की हत्या' नामक आधुनिक कविता से लिया गया है, जिसके रचयिता कुँवर नारायण हैं।

संदर्भ : इस कविता में कवि ने वृक्षों के प्रति अपनी संवेदना जताई है।

भाव स्पष्टीकरण : बचपन से ही अपने घर पर तैनात चौकीदार वृक्ष न दिखने पर कवि उदास हो जाते हैं और उसकी याद में खो जाते है। कवि और उस वृक्ष का एक रिश्ता बना हुआ था। दोस्ती हो गयी थी। धूप में, गर्मी में, बारिश में, सर्दी में हमेशा चौकन्ना, छायादार पेड़ के कट जाने पर कवि का क्षोभ बढ़ जाता है। वृक्षों के महत्व को समझाते हुए कवि कहते हैं- ऐसे जानी दुश्मनों से, नादिरों से, लुटेरों से, पर को, शहर को, देश को बचाना है। कवि ने स्वार्थी मनुष्य को धिक्कारा है।

IV] अ) एक शब्द या वाक्यांश या वाक्य में उत्तर लिखिए :

41) मिश्रानी दस वर्षों से मूलराज के घर में काम कर रही थी। **1**

42) दादाजी के अनुसार उनका परिवार बरगद के पेड़ वट वृक्ष के समान है। **1**

43) मल्लू और जगदीश ने बरगद (वट-वृक्ष) का पेड़ उखाड़ दिया। **1**

44)' सूखी डाली' के एकांकीकार हैं उपेन्द्रनाथ अश्क। **1**

45) संस्कृत के महाकवि भारवि हैं। **1**

46) पुत्र को पिता निर्वासित कर सकता है। **1**

47) प्रेम के बिना अनुशासन का मूल्य नहीं है। **1**

48) अहंकार उन्नति में बाधक है। **1**

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **5**

49) परेश ने दादा जी से कहा कि बेला अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहती है। उसका इस घर में मन नहीं लगता। अगर आप बाग वाले मकान का प्रबंध कर दें ..... जहाँ वह स्वेच्छापूर्वक जीवन बिता सके। दादा जी कहते हैं कि ये उनके जीते जी असंभव है। तुम चिंता न करो। मैं सबको समझा दूंगा – घर में किसी को तुम्हारी पत्नी का तिरस्कार करने का साहस न होगा। कोई उसका समय नष्ट न करेगा। ईश्वर की असीम कृपा से हमारे घर सुशिक्षित, सुसंस्कृत बहू आई है तो क्या हम अपनी मूर्खता से उसे परेशान कर देंगे? तुम जाओ बेटा, किसी प्रकार की चिंता को मन में स्थान न दो। मैं कोई-न-कोई उपाय ढूँढ निकालूँगा। तुम विश्वास रखो, वह अपने आपको परायों में घिरी अनुभव न करेगी। उसे वही आदर-सत्कार मिलेगा, जो उसे अपने घर में प्राप्त था। इस प्रकार दादा जी ने परेश को मनाया।

अथवा 5

दादा जी अपने परिवार को एक बड़े बरगद के पेड़ के समान मानते थे। अगर पेड़ की एक भी डाली टूट कर अलग हो जाए तो फिर चाहे उसे कितना भी पानी दो उसमें सरसता नहीं आ सकती। जब उन्हें पता चलता है कि परेश अलग होनेवाला है तो वे परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर समझाते हैं कि कोई भी छोटी बहू का अनादर न करे। दादाजी की आकांक्षा थी कि वृक्ष की सभी डालियाँ साथ-साथ बढ़ें, फलें फूलें, जीवन की सुखद शीतल वायु के परस से झूमें और सरसाएँ। पेड़ से अलग होनेवाली डाली की कल्पना उनके अंदर कंपन पैदा कर देती थी। वे परिवार को वटवृक्ष के समान देखना चाहते थे।

अथवा 5

बेला एक प्रतिष्ठित तथा संपन्न परिवार की सुशिक्षित लड़की है। उसका विवाह परेश से हो जाता है। वह ससुराल में आकर अपने को नये घर के अनुसार ढाल नहीं पाती। वह पढ़ी-लिखी रहने के कारण सबको गँवार, नीच, हीन दृष्टि से देखती है। घर में छोटी बहू होने के कारण सब उसकी आलोचना करना व उसे आदेश देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। वह आजाद ख्याल की है। उसे दूसरों का हस्तक्षेप तथा दूसरों की आलोचना पसंद नहीं है। वह परेश से अलग गृहस्थी बसाने के लिए कहती है। दादा जी परिवार के सभी सदस्यों को बुलाकर कहते हैं कि कोई बेला का अनादर नहीं करेगा। परिवार के सभी लोग अब उसका आदर करने लगते हैं। वह आदर नहीं बल्कि सबके साथ मिल-जुलकर काम करना चाहती है। जब उसे पता चलता है कि यह बदलाव दादा जी के कहने से हुआ है तो वह भावावेश में दादा जी से कहती है – 'आप पेड़ से किसी डाली का टूट कर अलग होना पसंद नहीं करते, पर क्या आप ये चाहेंगे कि पेड़ से लगी-लगी वह डाली सूख कर मुरझा जाय.....।'

5

50) भारवि महाकवि था, शास्त्रार्थ में सारे पंडितों को हराता था लेकिन जब उसके मन में अहंकार भर गया तब उसके पिता उन्हीं पंडितों के सामने उसे लांछित करते हैं। जिन पंडितों को वह हराया था वे ही उसका परिहास करते थे। दो बार उन्होंने पण्डितों के सामने भारवि को मूर्ख अज्ञानी कहा, उसकी निन्दा की तो भारवि क्रोध और ग्लानि से भर गया। उसने समझा कि जबतक उसके पिता जिंदा है वह ऐसे ही अपमानित होता रहेगा, इसलिए वह अपने पिता से बदला लेना चाहता था।

अथवा 5

सुशीला महापंडित श्रीधर की पत्नी तथा महाकवि भारवि की माता है। अपने विद्वान पुत्र पर पिता की तरह इसे भी गर्व है। वह अपने पुत्र भारवि के घर न लौटने के कारण दुःखी है। वह पुत्र शोक में सो नहीं पाती। वह मानती है कि यदि पुत्र के लिए माँ की ममता मूर्खता है तो ऐसी मूर्खता हमेशा बनी रहे। पति के समझाने पर भी पुत्र-मोह कम नहीं होता। पुत्र के व्यामोह में

वह अपने पति से भी काफी वाद-विवाद करती है, परन्तु अपनी मर्यादा में रहकर, अपने पति-धर्म को निभाती है।

अथवा **5**

प्रायश्चित को लेकर पिता और पुत्र के बीच का संवाद इस प्रकार है – भारवि क्रोध और ग्लानि से भरकर अपने पिता श्रीधर की हत्या करना चाहता था। जब उसे पता चलता है कि उसके पिता की ताड़ना के पीछे उनकी शुभकामनाएँ और मंगल कामनाएँ छिपी हैं तो वह दुखी हो जाता है। उसने अपने पिता से कहा कि वह अपने अपराध के लिए प्रायश्चित करना चाहता है। पिता कहते हैं कि पश्चाताप ही प्रायश्चित है। वे उसे माँ की सेवा कर अपने जीवन को सफल बनाने के लिए कहते हैं। भारवि कहता है – माता की सेवा तो मेरे जीवन की चरम साधना है ही लेकिन यदि आप चाहते हैं कि आपका पुत्र भारवि जीवित रहे तो उसे दण्ड दीजिए। पुत्र के बहुत कहने पर वे उसे दण्ड देते हैं – छः मास तक ससुराल में जाकर सेवा करना और जूठे भोजन पर अपना पोषण करना। भारवि उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

V] 51) अ) वाक्य शुद्द कीजिए :-

i) उसके हाथ काँप रहे थे । **1**

ii) प्रात:काल स्त्री और पुरुष 'गया' चले गये । **1**

iii) पाशविकता बढती चली जा रही है । **1**

iv) मैने जाकर माँ के चरण छुए । **1**

52) आ) कोष्टक में दिए गए उचित कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए:-

i) में **ii**) के **iii**) का **iv**) को **4X1=4**

53) इ) निम्नलिखित वाक्यों को सूचनानुसार बदलिए:

i) शंकर गाडी में नारियल भर कर लाया था । **1**

ii) झूठे से सभी घृणा करेंगे । **1**

iii) एक बहुत आर्थिक झटके के कारण वे इन्दौर से अजमेर आ रहे है। **1**

54) ई) **मुहावरे : i**) दु:ख दर्द सहना **ii**) मुसीबत पीछे पडना **4X1=4**
iii) भाग जाना **iv**) शुरुआत करना ।

55) उ) **लिंग : १**) छात्रा **२**) महारानी **३**) सचिवा । **3X1=3**

56) ऊ) **अनेक शब्दों केलिए एक शब्द :**
१) अज्ञानी **२**) दुर्घटना **३**) सत्यावान । **3X1=3**

57) ए) **उपसर्ग : १)** निर्भय **२**) अकर्म । **2X1=2**

58) ऐ) **प्रत्यय : १**) चंचल + ता **२**) पत्र +कार । **2X1=2**

VI] 59) अ) I) निबंध रचना :

१) प्रस्तावना – विषया का अर्थ लिखना । **5**

२) पूर्णविवरण – विषय के प्रति पूर्ण रुप से विवरण देना उपयोग अनुपयोग सभी विचारों के प्रति विवरण देना

३) उपसंहार– विषय के प्रति अपना उद्देश्य प्रकटक करना ।

अथवा

2) पत्र– १) बेजनेवाले का पता । **5**

२) सम्बोधन– प्रिय भाई

३) व्यायाम का महत्व के बारे में विवरण देना।

४) सेवा में –पाने वाले का पता लिखना ।

५) अभिवादन में –तुम्हारा भाई, हस्ताक्षर'|

60) आ) अनुच्छेद – **5X1=5**

i) 18 -19 **ii)** काशी

iii) हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, मरठी, बंगला, गुजराती, मारवडी, पंजाबी, उर्दू आदी **iv)** ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट **v)** चॉबीस साल

61) इ) अनुवाद –

i) माँ अपने बच्चों को हमेशा प्यार करती है । **1**

ii) देश की सुरक्शा हमारा कर्तव्य है । **1**

iii) सरला बहुत प्रतिभाशालिनी है । **1**

iv) पिछले माह हम गाँव गए थे । **1**

v) आप काँफ़ी लेंगे? **1**

vi) मैं मैसूर में एक साल रहा था । **1**

vii) देश भक्तों का सदा आदर करना चाहिए । **1**

viii) हम एक दूसरे से प्यार से जीना चाहिए । **1**

****